

## ब्रह्मा बाप के विशेष पाँच कदम

आज विश्व स्नेही बाप अपने विशेष अति स्नेही और समीप बच्चों को देख रहे हैं। स्नेही सभी बच्चे हैं लेकिन अति स्नेही वा समीप बच्चे वही हैं जो हर कदम में फॉलो करने वाले हैं। निराकार बाप ने साकारी बच्चों को साकार रूप में फॉलो करने के लिए साकार ब्रह्मा बाप को बच्चों के आगे निमित्त रखा जिस आदि आत्मा ने ड्रामा में 84 जन्मों के आदि से अन्त तक अनुभव किये, साकार रूप में माध्यम बन बच्चों के आगे सहज करने के लिए एगजैम्पल बने क्योंकि शक्तिशाली एगजैम्पल को देख फॉलो करना सहज होता है। तो स्नेही बच्चों के लिए स्नेह की निशानी बाप ने ब्रह्मा बाप को रखा और सर्व बच्चों को यही श्रेष्ठ श्रीमत दी कि हर कदम में फॉलो फादर। सभी अपने को फॉलो फादर करने वाले समीप आत्मायें समझते हो? फॉलो करना सहज लगता या मुश्किल लगता है? ब्रह्मा बाप के विशेष कदम क्या देखे?

**1- सबसे पहला कदम – सर्वश त्यागी।** न सिर्फ तन से और लौकिक सम्बन्ध से लेकिन सबसे बड़ा त्याग, पहला त्याग मन-बुद्धि से समर्पण अर्थात् मन-बुद्धि में हर समय बाप और श्रीमत की हर कर्म में स्मृति रही। सदा स्वयं को निमित्त समझ हर कर्म में न्यारे और प्यारे रहे। देह के सम्बन्ध से, मैं-पन का त्याग। जब मन-बुद्धि की बाप के आगे समर्पणता हो जाती है तो देह के सम्बन्ध स्वतः ही त्याग हो जाते हैं। तो पहला कदम – सर्वश त्यागी।

**2- दूसरा कदम – सदा आज्ञाकारी रहे।** हर समय हर एक बात में – चाहे स्व-पुरुषार्थ में, चाहे यज्ञ-पालना में निमित्त बने क्योंकि एक ही ब्रह्मा विशेष आत्मा है जिसका ड्रामा में विचित्र पार्ट नून्धा हुआ है। एक ही आत्मा माता भी है, पिता भी हैं। यज्ञ-पालना के निमित्त होते हुए भी सदा आज्ञाकारी रहे। स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उलंघन नहीं किया। हर समय “जी हाजिर” का प्रत्यक्ष स्वरूप सहज रूप में देखा।

**3- तीसरा कदम – हर संकल्प में भी वफ़ादार।** जैसे पतिव्रता नारी एक पति के बिना और किसी को स्वप्न में भी याद नहीं कर सकती, ऐसे हर समय एक बाप दूसरा न कोई – यह वफ़ादारी का प्रत्यक्ष स्वरूप देखा। विशाल नई स्थापना की जिम्मेवारी के निमित्त होते भी वफ़ादारी के बल से, एक बल एक भरोसे के प्रत्यक्ष कर्म में हर परिस्थिति को सहज पार किया और कराया।

**4- चौथा कदम – विश्व-सेवाधारी।** सेवा की विशेषता- एक तरफ अति निर्माण, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जितना ही निर्माण उतना ही बेपरवाह बादशाह। सत्यता की निर्भयता-यही सेवा की विशेषता है। कितना भी सम्बन्धियों ने, राजनेताओं ने, धर्म-नेताओं ने नये ज्ञान के कारण ऑपोजीशन किया लेकिन सत्यता और निर्भयता की पोजीशन से जरा भी हिला न सके। इसको कहते हैं निर्माण और अथॉरिटी का बैलेंस। इसकी रिजल्ट आप सभी देख रहे हो। गाली देने वाले भी मन से आगे झुक रहे हैं। सेवा की सफलता का विशेष आधार निर्माण-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव। इसी विधि से ही सिद्धिस्वरूप बने।

**5- पांचवा कदम – कर्मबन्धन मुक्त, कर्म-सम्बन्ध मुक्त** अर्थात् शरीर के बंधन से मुक्त फरिश्ता, अर्थात् कर्मातीत। सेकण्ड में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप समीप और समान।

तो आज विशेष संक्षेप में पांच कदम सुनाये। विस्तार तो बहुत है लेकिन सार रूप में इन पांच कदमों

के ऊपर कदम उठाने वाले को ही फॉलो फादर कहा जाता है। अभी अपने से पूछो – कितने कदमों में फॉलो किया है? समर्पित हुए हो या सर्वन्श सहित समर्पित हुए हो? सर्व-वंश अर्थात् संकल्प, स्वभाव और संस्कार, नेचर में भी बाप समान हों। अगर अब तक भी चलते-चलते समझते हो और कहते हो— मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरी नेचर ऐसी है वा न चाहते भी संकल्प चल जाते हैं, बोल निकल पड़ते हैं – तो इसको सर्वन्श त्यागी नहीं कहेंगे। अपने को समर्पित कहलाते हो लेकिन सर्वन्स समर्पण – इसमें मेरा-तेरा हो जाता है। जो बाप का स्वभाव, स्व का भाव अर्थात् आत्मिक भाव। संस्कार सदा बाप समान स्नेह, रहम, उदारदिल का, जिसको बड़ी दिल कहते हो। छोटी दिल अर्थात् हृद का अपनापन देखना – चाहे अपने प्रति, चाहे अपने सेवा-स्थानों के प्रति, अपने सेवा के साथियों के प्रति। और बड़ी दिल - सर्व अपना-पन अनुभव हो। बड़ी दिल में सदा हर प्रकार के कार्य - चाहे तन के, चाहे मन, चाहे धन के, चाहे सम्बन्ध में सफलता की बरक्कत होती है। बरक्कत अर्थात् ज्यादा फायदा होता है और छोटी दिल वाले को मेहनत ज्यादा, सफलता कम होती है। पहले भी सुनाया था कि छोटी दिल वालों के भण्डारे और भण्डारा – सदा बरक्कत की नहीं होती। सेवा-साथी दिलासे बहुत देंगे – आप ये करो हम करेंगे लेकिन समय पर सरकमस्टांस सुनाने शुरू कर देंगे। इसको कहते हैं बड़ी दिल तो बड़ा साहेब राज़ी। राज़युक्त पर साहेब सदा राज़ी रहता है। टीचर्स सभी बड़ी दिल वाली हो ना! बेहद के बड़े ते बड़े कार्य अर्थ ही निमित्त हो। यह तो नहीं कहते हो ना – हम फलाने एरिया के कल्याणकारी हैं या फलाने देश के कल्याणकारी हैं? विश्व-कल्याणकारी हो ना। इतने बड़े कार्य के लिए दिल भी बड़ी चाहिए ना? बड़ी अर्थात् बेहद वा टीचर्स कहेंगी कि हमको तो हृदें बनाकर दी गई हैं? हृदें भी क्यों बनाई गई हैं, कारण? छोटी दिल। कितना भी एरिया बनाकर दें लेकिन आप सदा बेहद का भाव रखो, दिल में हृद नहीं रखो। स्थान की हृद का प्रभाव दिल पर नहीं होना चाहिए। अगर दिल में हृद का प्रभाव है तो बेहद का बाप हृद की दिल में नहीं रह सकता। बड़ा बाबा है तो दिल बड़ी चाहिए ना। कभी ब्रह्मा बाप ने मधुबन में रहते यह संकल्प किया कि मेरा तो सिर्फ मधुबन है, बाकी पंजाब, यू.पी., कर्नाटक आदि बच्चों का है? ब्रह्मा बाप से तो सबको प्यार है ना। प्यार का अर्थ है फॉलो करना।

सभी टीचर्स फॉलो फादर करने वाली हो या मेरा सेन्टर, मेरे जिज्ञासू, मेरी मदोगरी और स्टूडेंट भी समझते – मेरी टीचर यह है? फॉलो फादर अर्थात् मेरे को तेरे में समाना, हृद को बेहद में समाना। अभी इस कदम पर कदम रखने की आवश्यकता है। सबके संकल्प, बोल, सेवा की विधि बेहद की अनुभव हो। कहते हो ना – अभी क्या करना है इस वर्ष। तो स्व-परिवर्तन के लिए हृद को सर्व वंश सहित समाप्त करो। जिसको भी देखो वा जो भी आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो। हृद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। ऐसे नहीं समझना कि जितने सेन्टर्स खोलते वा जितनी ज्यादा सेवा करते हो इतना बड़ा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की प्राइज़ नहीं मिलनी है। सेवा भी हो, सेन्टर्स भी हों लेकिन हृद का नाम-निशान न हो। उसको नम्बरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा। इसलिए अभी-अभी थोड़े समय के लिए अपनी दिल खुश करके नहीं बैठना, बेहद की खुशबू वाला बाप समान और समीप अब भी है और 21 जन्म भी ब्रह्मा बाप के समीप होगा। तो ऐसी प्राइज़ चाहिए या अभी की? बहुत सेन्टर्स हैं, बहुत जिज्ञासू हैं... इस बहुत-बहुत में नहीं जाना। बड़ी दिल को अपनाओ। सुना, इस वर्ष क्या करना है? इस वर्ष स्वप्न में भी किसके हृद का संस्कार उत्पन्न न हो। हिम्मत है ना? एक-दो को फॉलो नहीं करना, बाप को फॉलो करना।

दूसरी बात – बापदादा ने वाणी के ऊपर भी विशेष अटेन्शन दिलाया था। इस वर्ष अपने बोल के ऊपर विशेष डबल अटेन्शन। सभी को बोल के लिए डायरेक्शन भेजा गया है। इस पर प्राइज मिलनी है। सच्चाई-सफाई से अपना चार्ट स्वयं ही रखना। सच्चे बाप के बच्चे हो ना। बापदादा सभी को डायरेक्शन देते हैं – जहाँ देखते हो सेवा स्थिति को डगमग करती है, उसे सेवा में कोई सफलता मिल नहीं सकती। सेवा भले कम करो लेकिन स्थिति को कम नहीं करो। जो सेवा स्थिति को नीचे ले आती है उसको सेवा कैसे कहेंगे! इसलिए बापदादा सभी को फिर से यही कहेंगे कि सदा स्व-स्थिति और सेवा अर्थात् स्व-सेवा और औरों की सेवा साथ-साथ सदा करो। स्व-सेवा को छोड़ पर सेवा करना, इससे सफलता नहीं प्राप्त होती। हिम्मत रखो - स्व सेवा और पर-सेवा की। सर्वशक्तिवान बाप मददगार है। इसलिए हिम्मत से दोनों का बैलेन्स रख आगे बढ़ो। कमजोर नहीं बनो। अनेक बार के निमित्त बने हुए विजयी आत्मा हैं। ऐसी विजयी आत्माओं के लिए कोई मुश्किल नहीं, कोई मेहनत नहीं। अटेन्शन और अभ्यास— यह भी सहज और स्वतः अनुभव करेंगे। अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखना। कोई-कोई अटेन्शन को टेन्शन में बदल लेते हैं। ब्राह्मण-आत्माओं का निजी संस्कार “अटेन्शन और अभ्यास” है। अच्छा!

बाकी रही विश्व कल्याण के सेवा की बात। तो इस वर्ष हर एक सेवाकेन्द्र जितने भी सन्देश वा सम्पर्क वाले हैं, उन्हीं को निमन्त्रण देकर यथाशक्ति स्नेह-मिलन करो। चाहे वर्गीकरण के हिसाब से करो वा मिला हुआ करो लेकिन उन आत्माओं की तरफ विशेष अटेन्शन दो। पर्सनल मिलो। सिर्फ पोस्ट भेज देते हो तो उससे भी रिजल्ट कम निकलती है। अपने ही आने वाले स्टूडेंट्स के ग्रुप बनाओ और उन्हीं में से थोड़े लोगों को पर्सनल समीप आने के निमित्त बनाओ। तो सब स्टूडेंट्स भी बिजी होंगे और सेवा की सलेक्शन भी हो जायेगी, जिसको आप लोग कहते हो- पीठ नहीं होती। ऐसी आत्माओं को भी कोई नई बात सुनाने की चाहिए। अभी तक तो बेटर वर्ल्ड क्या होगी। उसके वीजन्स इकट्ठे किये हैं। अब फिर उन्हीं को अपनी तरफ अटेन्शन दिलाओ। उसकी विशेष टॉपिक रखो “सेल्फ प्रोग्रेस” और “सेल्फ प्रोग्रेस का आधार”। यह नई विषय रखो। इस स्व - प्रोग्रेस के लिए स्पीचुअल बजट बनाओ और बजट में सदैव बचत की स्कीम बनाई जाती है। तो स्पीचुअल बचत का खाता क्या है! समय, बोल, संकल्प और एनर्जी को वेस्ट से बेस्ट में चेन्ज करना होगा। सभी को अब स्व तरफ अटेन्शन दिलाओ। बच्चों ने टॉपिक निकाली थी “फॉर सेल्फ ट्रांसफरमेशन”। लेकिन इस वर्ष हरेक सेवाकेन्द्र को फ्रीडम है, जितनी जो कर सकते, अपनी स्वउन्नति के साथ-साथ पहले स्वयं के बचत की बजट बनाओ और सेवा में औरों को इस बात का अनुभव कराओ। अगर कोई बड़े प्रोग्राम्स रख सकते हो तो रखो, अगर नहीं कर सकते तो भले छोटे प्रोग्राम्स करो। लेकिन विशेष अटेन्शन स्व-सेवा और पर-सेवा का बैलेन्स वा विश्व सेवा का बैलेन्स हो। ऐसे नहीं कि सेवा में ऐसे बिजी हो जाओ जो स्व-उन्नति का समय नहीं मिले। तो यह स्वतन्त्र वर्ष है सेवा के लिए। जितना चाहो उतना करो। दोनों प्लैन स्मृति में रख और भी एडीशन कर सकते हो और प्लैन में रत्न जड़ सकते हो। बाप सदैव बच्चों को आगे रखता है। अच्छा!

चारों ओर के सर्व फॉलो फादर करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा डबल सेवा का बैलेन्स रखने वाले बाप की ब्लैसिंग के अधिकारी आत्माओं को, सदा बेहद के बादशाह – ऐसे राजयोगी, सहजयोगी, स्वतः योगी, सदा अनेक बार के विजय के निश्चय और नशे में रहने वाले अति सहयोगी स्नेही बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

### अत्यक्त बापदादा से पर्सनल मुलाकात:

सदा अमृतवेले से लेकर रात तक हर कार्य चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक... सब कार्य सहज और सफल हों, उसकी सहज विधि क्या है? कोई भी कर्म करते हो तो पहले त्रिकालदर्शी बन फिर कोई कर्म करो क्योंकि त्रिकालदर्शी बनकर काम करने से तीनों कालों का ज्ञान बुद्धि में रहने से कोई कर्म नीचे-ऊपर नहीं होगा। वैसे भी ज्ञानी का अर्थ ही है जो आगे-पीछे सोच-समझ कर कर्म करे, कर्म के पहले उसकी रिजल्ट को जाने। ऐसे नहीं – जल्दी-जल्दी जो आया वो कर लिया, उसमें सफलता नहीं होती। पहले परिणाम को सोचो फिर कर्म करो तो सदा श्रेष्ठ परिणाम निकलेगा। श्रेष्ठ परिणाम को ही सफलता कहा जाता है। ऐसे नहीं – बहुत बिजी था, जो काम सामने आया वह करना शुरू कर दिया। नहीं। जैसे बापदादा ने श्रीमत दी है कि भोजन करने के पहले भोग लगाओ, पीछे खाओ। भोग लगाने का कर्म अगर नहीं करते और जल्दी-जल्दी में खा लिया तो परिणाम क्या होगा? एक तो याद भूलने से जो ब्रह्मा-भोजन का, अन्न का मन पर प्रभाव पड़ना चाहिए, वह नहीं होगा और दूसरा बाप की श्रीमत न मानने का नुकसान होगा क्योंकि अवज्ञा हो गई ना। उसका भी उल्टा फल मिलता है। अगर कर्म करने से पहले यह आदत पड़ जाए कि पहले तीनों काल सोचना है, त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर फिर कर्म करो तो कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं होगा, साधारण नहीं होगा। लौकिक में भी सफलता प्राप्त करेंगे और अलौकिक में सफलता ही सफलता है। तो त्रिकालदर्शी के स्मृति की स्थिति रूपी तख्त पर बैठो, फिर निर्णय करो कि क्या करना है, क्या नहीं करना है, कैसे करना है! फिर कोई भी कर्म फल नहीं देवे – यह हो नहीं सकता। बीज अमर शक्तिशाली होगा तो फल अवश्य मिलेगा। लेकिन जल्दी-जल्दी में कमजोर कर्म करते हो तो फल भी थोड़ा-बहुत मिल जाता है, जितना मिलना चाहिए उतना नहीं मिलता, जितना चाहते हो उतना नहीं मिलता। तो हर कर्म की सफलता का आधार है - त्रिकालदर्शी स्थिति, ऐसे नहीं – सिर्फ याद रखो कि मास्टर त्रिकालदर्शी हूँ... और कर्म करने के समय भूल जाओ। इसे यूज करना। इस अभ्यास में कभी भी अलबेले नहीं बनो। यह अभ्यास करो क्योंकि 21 जन्म के लिए जमा करना है। एक जन्म में 21 जन्म का जमा करना है तो कितना अटेन्शन देना पड़ेगा। टेन्शन नहीं लेकिन सदा अटेन्शन रखो। अलबेलेपन का अब परिवर्तन करो। दाता दे रहा है तो पूरा लो। देने वाला दे और लेने वाला थोड़ा लेकर खुश हो जाए तो रिजल्ट क्या होगी? फिर नहीं मिलेगा। इसलिए पूरा अटेन्शन दो। अच्छा!

### वरदान:- सदा पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले मास्टर शिक्षक भव

हम मास्टर शिक्षक हैं, मास्टर कहने से बाप स्वतः याद आता है। बनाने वाले की याद आने से स्वयं निमित्त हूँ – यह स्वतः स्मृति में आ जाता है। विशेष स्मृति रहे कि हम पुण्य आत्मा हैं, पुण्य का खाता जमा करना और कराना – यही विशेष सेवा है। पुण्य आत्मा कभी पाप का एक परसेन्ट संकल्प मात्र भी नहीं कर सकती। मास्टर शिक्षक माना सदा पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले, बाप समान।

### स्लोगन:-

संगठन के महत्व को जानने वाले संगठन में ही स्वयं की सेफ्टी का अनुभव करते हैं।